→ अध्यात्मवाद या प्रत्ययवाद (Idealism)

अध्यात्मवाद भौतिकवाद का विरोधी सिद्धांत है। अध्यात्मवाद मानता है कि मूल सत्ता चेतन स्वरूप या अध्यात्म-स्वरूप है और सब कुछ इसी का प्रतिफल है। या तो उसकी अभिव्यक्ति है। इसे ही प्रत्यय (Idea), आत्मा (Self) या मन (Mind) भी कहा जाता है।

→ मूल तत्व आध्यात्मिक होने से तदनुसार सारा विश्व ही आध्यात्मिक या विज्ञानरूप अर्थात अभौतिक है। यदि कोई पदार्थ भौतिक लगता है तो वह प्रतीति (Appearance) मात्र है, वास्तविक नहीं। प्रत्ययवाद का दावा है कि जो भौतिक जान पड़ता है वह भी प्रत्ययात्मक (of the nature of Ideas) है, आत्मा या मन का विकार है।

→ प्रत्ययवाद की प्रमुख विशेषता —
- → अप्रकृतिवादी
- → केन्द्रवादी
- → प्रयोजनवादी

→ पाश्चात्य प्रत्ययवाद के तीन रूप होते हैं —

(1) आत्मनिष्ठ प्रत्ययवाद (Subjective Idealism) - बर्कले
e.g. भारतीय मत में - बौद्ध का योगाचार मत

(2) वस्तुनिष्ठ प्रत्ययवाद (Objective Idealism) - प्लेटो

(3) निरपेक्ष प्रत्ययवाद (Absolute Idealism) - हेगेल
भारतीय मत में शंकर का अद्वैतवाद

* द्वैतवाद -

इस मत के अनुसार मूल तत्व जड़ और चेतन दोनों हैं। इस मत को मानने वालों में भारतीय दर्शन में सांख्य दर्शन इसके उदाहरण है तथा पाश्चात्य दर्शन में देकार्त का दर्शन इसका प्रमुख उदाहरण है।

* अनुभयवाद - इसके अनुसार मूल तत्व की प्रकृति न तो जड़, न चेतन, बल्कि दोनों से भिन्न अनुभय (Neutral) मानता है। अनुभयवाद के प्रवर्तक विलियम जेम्स को माना जाता है। मैक और एवेनेरियस इसी मत को मानते हैं।

ज्ञानमीमांसा (Epistemology)

दर्शन की जिस शाखा के अन्तर्गत ज्ञान क्या है, ज्ञान प्राप्ति के कितने साधन हैं आदि विषयों का अध्ययन किया जाता है उसे प्रमाण विज्ञान या ज्ञानमीमांसा कहा जाता है।

भारतीय दर्शन में ज्ञान प्राप्ति के साधन को लेकर सभी सम्प्रदायों के बीच मतभेद है।

चार्वाक :- प्रत्यक्ष

बौद्ध :- प्रत्यक्ष, अनुमान

वैशेषिक :- प्रत्यक्ष, अनुमान

सांख्य :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द

योग :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द

विशिष्टाद्वैत :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द

जैन :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द

न्याय :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान

मीमांसा (प्रभाकर) :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति

मीमांसा (कुमारिल) :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि/अभाव

वेदान्त :- प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति तथा अनुपलब्धि

→ अन्य वेदान्ती - संभव और ऐतिह्य को भी प्रमाण मानते हैं।

→ तान्त्रिक दार्शनिक चेष्टा को भी एक स्वतंत्र प्रमाण मानते हैं।

→ संभव प्रमाण - अनुमान के अन्तर्गत आता है जैसे - यह ज्ञान संभव हो जाता है कि जिसके पास सौ रुपया है, उसके पास पचास रु० भी होगा।

→ ऐतिह्य - यह शब्द प्रमाण के अन्तर्गत है वक्ता का नाम अज्ञात है, यह किवदन्ती है - जैसे इस पेड़ पर भूत रहता है।

→ ऐतिह्य का अर्थ है - परम्परा या पौराणिक उपदेश।

→ चेष्टा - यह अनुमान के अन्तर्गत आता है। जैसे - हाथ से इशारा करके (चेष्टा करके) किसी वस्तु का ज्ञान कराना जैसे - यह पेड़ है।

पाश्चात्य दर्शन में ज्ञान प्राप्ति के साधन को लेकर तीन सिद्धांत आते हैं: —

1. बुद्धिवाद (Rationalism)
इसे मानने वालों में - देकार्त, स्पिनोजा, तथा लाइबनित्ज आते हैं।

2. अनुभववाद (Empiricism)
इसे मानने वालों में लॉक, ह्यूम और बर्कले आते हैं।

3. समीक्षावाद (Criticism)
इसे मानने वालों में प्रमुख रूप से - कांट आते हैं।

* बुद्धिवाद - यह ज्ञानशास्त्रीय सिद्धान्त है, जिसके अनुसार वास्तविक और सत्य ज्ञान की प्राप्ति बुद्धि द्वारा ही होती है, किसी इतर साधन से नहीं। बुद्धि द्वारा प्राप्त ज्ञान अनिवार्य एवं सार्वभौम (Necessary & Universal) होता है। सार्वभौम होने का अर्थ है कि यह सभी देश और काल के पदार्थों के विषय में सत्य होता है, उसकी सत्यता किसी देश विशेष या काल विशेष तक सीमित नहीं है तथा अनिवार्य का मतलब है उसकी सत्यता का निराकरण नहीं हो सकता। अतः उसका अपवाद या विपरीत सत्य नहीं हो सकता है। यह ज्ञान जन्मजात प्रत्यय/सहज प्रत्यय (Innate idea) के द्वारा निगमनात्मक विधि से प्राप्त होता है।

* अनुभववाद - यह बुद्धिवाद का विरोधी सिद्धांत है। इसके अनुसार जन्म के समय मानव मस्तिष्क साफ स्लेट और कागज के समान होता है जिस पर कुछ भी अंकित नहीं होता है। सभी ज्ञान इन्द्रिय अनुभव के द्वारा प्राप्त रूप में प्राप्त होते हैं। अनुभव द्वारा प्राप्त ज्ञान में नवीनता होती है तथा यह आगमनात्मक विधि से प्राप्त होता है।

* समीक्षावाद - ज्ञान प्राप्ति के साधन के रूप में बुद्धिवाद एवं अनुभववाद दोनों को एकांगी मानता है और कहता है कि ज्ञान प्राप्ति के लिए बुद्धि और अनुभव दोनों आवश्यक हैं, क्योंकि बुद्धि द्वारा प्राप्त ज्ञान में अनिवार्यता एवं सार्वभौमिकता होती है तथा अनुभव द्वारा प्राप्त ज्ञान में नवीनता होती है। ज्ञान के लिए दोनों आवश्यक हैं। अतः ज्ञान प्राप्ति में दोनों का समान योगदान है।

नीतिशास्त्र (Ethics)

→ एथिक्स तथा मोरल फिलॉसोफी पर्यायवाची हैं। एथिक्स शब्द की उत्पत्ति 'एथिका' से हुई है जो ग्रीक भाषा के शब्द 'एथोस' से व्युत्पन्न हुआ है जिसका अर्थ 'रीति-रिवाज' होता है।

(हाशिये में: एथिका Ethica, एथोस Ethos)

परिभाषा - नीतिशास्त्र या आचारशास्त्र वह विज्ञान है, जिसमें मानव-आचरण के आदर्श की मीमांसा होती है, जिससे मनुष्य का कर्तव्य-अकर्तव्य और उसके कर्मों के औचित्य-अनौचित्य का ठीक-ठीक निर्णय किया जा सके। चूंकि आचरण का आधार चरित्र है, इसलिए इसे चरित्र विज्ञान भी कहा जा सकता है। अरस्तू/अरस्तू की रचना निकोमैकियन एथिक्स को नीतिशास्त्र का प्रथम ग्रंथ माना जाता है।

* नीतिशास्त्र की तीन प्रमुख शाखा हैं: —

नीतिशास्त्र —
- → आदर्शमूलक नीतिशास्त्र / मानक नीतिशास्त्र
- → अधिनीतिशास्त्र / विश्लेषणात्मक नीतिशास्त्र
- → अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र / व्यावहारिक नीतिशास्त्र

(1) आदर्शमूलक नीतिशास्त्र (Normative Ethics): —

आदर्शमूलक नीतिशास्त्र का मूल उद्देश्य मनुष्य और उसके कर्मों के लिए कुछ विशेष नियमों, सिद्धान्तों या आदर्शों का युक्तिसंगत प्रतिपादन करना है। यह हमें बताता है कि हमारे कौन-कौन कर्म उचित या अनुचित हैं, हमारे लिए शुभ क्या है? तथा अशुभ क्या है? हमें क्या करना चाहिए, क्या नहीं करना चाहिये इत्यादि। अर्थात् शुभ-अशुभ, उचित-अनुचित कर्तव्य, अंतिम साध्य आदि से संबंधित सभी समस्याओं पर आदर्शमूलक नीतिशास्त्र के अन्तर्गत विचार किया जाता है।

2. अधिनीतिशास्त्र या विश्लेषणात्मक नीतिशास्त्र (Meta Ethics / Analytic Ethics) या आलोचनात्मक नीतिशास्त्र

अधिनीतिशास्त्र का उद्देश्य आदर्शमूलक नीतिशास्त्र के अन्तर्गत आनेवाले नैतिक निर्णयों तथा नैतिक सिद्धान्तों का विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक अध्ययन करना है। इसी कारण इसे विश्लेषणात्मक नीतिशास्त्र अथवा आलोचनात्मक नीतिशास्त्र भी कहा जाता है।

→ नीतिशास्त्र की ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ऑफ फिलॉसफी के अनुसार, अधिनीतिशास्त्र नीतिशास्त्र की अवधारणाओं और इसकी प्रकृति की क्रिया है, जिसमें नीतिशास्त्र की अवधारणाओं और विधियों का अन्वेषण किया जाता है।

5. अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र या व्यावहारिक नीतिशास्त्र :-
(Applied Ethics or Practical Ethics)

→ व्यावहारिक नीतिशास्त्र का उदय 20 वीं सदी के उत्तरार्द्ध में हुआ।
→ पीटर सिंगर (आस्ट्रेलिया दार्शनिक) का व्यावहारिक नीतिशास्त्र के विकास में महत्वपूर्ण योगदान है।
→ पीटर सिंगर की प्रमुख किताब – प्रैक्टिकल एथिक्स है।

सिंगर के अनुसार व्यावहारिक नीतिशास्त्र के अन्तर्गत किसी तात्कालिक महत्व की व्यावहारिक समस्या का नैतिक समाधान खोजने का प्रयास अनुप्रयुक्त नीतिशास्त्र का विषय है। जैसे :- गर्भपात, पशु के साथ व्यवहार, पर्यावरणीय समस्या इत्यादि।

→ विश्लेषणात्मक दर्शन की शुरुआत अंग्रेज़ दार्शनिक मूर और रसेल से मानी जाती है।

→ सी. एल. स्टीवेंसन की - एथिक्स एण्ड लैंग्वेज को अधिनीतिशास्त्र का प्रथम व्यवस्थित ग्रंथ माना जा सकता है।

* व्यावहारिक नीतिशास्त्र या अप्लाइड एथिक्स के अन्तर्गत उपशाखाओं का विकास हुआ। जैसे :-
  - बायोएथिक्स / जैव नीतिशास्त्र (Bioethics)
  - व्यावसायिक नीतिशास्त्र (Professional ethics)
  - पर्यावरणीय नीतिशास्त्र (Environmental ethics)
  - पशु नीतिशास्त्र (Animal ethics)
  - सैक्स नीतिशास्त्र (Sexual ethics)
  - कम्प्यूटर और सूचना नीतिशास्त्र (Computer & information ethics)
  - मीडिया नीतिशास्त्र
  - चिकित्सा नीतिशास्त्र